।। श्री गणेशाय नमः ।।
हिन्दी पाक्षिक Fortnightly

बात हिन्दुस्तान की
Baat Hindustan ki

RNI No.: WBHIN/2021/84049

विक्रम संवत 2083, श्रावण मास, कृष्ण पक्ष तृतीया, 1-15 अगस्त 2026 (1-15 August 2026), वर्ष-6 (YEAR-6), अंक - 07, पृष्ठ - 4, मूल्य - ₹2, (PRICE- 2/-)

आजादी के 79 साल: संघर्ष से समृद्धि तक...

टूटी हुई अर्थव्यवस्था से दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति बनने तक का सफर

जिस भारत ने कभी भूख, गरीबी और संसाधनों की कमी के बीच आज़ादी का सूरज देखा था, आज वही भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है।
15 अगस्त 1947... यह तारीख सिर्फ अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति का दिन नहीं थी। यह उस भारत के पुनर्जन्म की सुबह थी, जिसकी अर्थव्यवस्था लगभग बिखर चुकी थी।
देश विभाजन का दर्द झेल रहा था। लाखों लोग विस्थापित थे। उद्योग नगण्य थे, शिक्षा सीमित थी, अस्पताल गिने-चुने थे और गाँवों तक पहुँचने के लिए सड़कें तक नहीं थीं। उस समय किसी ने शायद कल्पना भी नहीं की होगी कि एक दिन यही भारत दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल भुगतान नेटवर्क का संचालन करेगा, अंतरिक्ष में अपने यान भेजेगा, विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा और दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में वैश्विक मंच पर नेतृत्व करेगा।
79 वर्षों का यह सफर केवल सरकारों का नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों के संघर्ष, मेहनत और सपनों की कहानी है।

1947 से 2026: कितना बदल गया भारत?

1947 में भारत की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित थी। देश का वैश्विक व्यापार में योगदान बेहद सीमित था। विदेशी मुद्रा भंडार लगभग नगण्य था। औद्योगिक उत्पादन बहुत कम था और अधिकांश मशीनें विदेशों से आयात करनी पड़ती थीं। आज भारत लगभग 4.3 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन चुका है और दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। भारत आज वैश्विक निवेश का प्रमुख केंद्र है। एक समय भारत विदेशी सहायता लेने वाला देश था...
आज दुनिया भारत में निवेश करने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही है।

अनाज आयात करने वाला भारत दुनिया का अन्नदाता कैसे बना:

आजादी के समय भारत खाद्यान्न संकट से जूझ रहा था। अमेरिका से PL-480 योजना के तहत गेहूं मंगाना पड़ता था। सिंचाई के साधन सीमित थे और किसान पूरी तरह मानसून पर निर्भर थे। हरित क्रांति ने भारत की तस्वीर बदल दी। आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा खाद्यान्न उत्पादक है। दूध उत्पादन में पहले स्थान पर है। चावल और गेहूं के सबसे बड़े उत्पादकों में शामिल है। आज किसान ड्रोन से खेतों की निगरानी कर रहे हैं। सैटेलाइट से मौसम की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। मोबाइल ऐप से मंडी का भाव देख रहे हैं। यह वही भारत है जहाँ कभी बैलगाड़ी ही खेती का सबसे बड़ा साधन थी।

एक AIIMS से आधुनिक चिकित्सा नेटवर्क तक

1947 में देश में डॉक्टरों की भारी कमी थी। विशेषज्ञ अस्पताल केवल कुछ महानगरों तक सीमित थे। उच्च स्तरीय इलाज के लिए लोगों को विदेश जाना पड़ता था। 1956 में दिल्ली में AIIMS की स्थापना हुई। आज देशभर में अनेक AIIMS संचालित या निर्माणाधीन हैं। सैकड़ों मेडिकल कॉलेज खुल चुके हैं। एमबीबीएस की सीटें कई गुना बढ़ चुकी हैं। आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं के माध्यम से करोड़ों लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा मिली है।आज जिस मरीज को कभी दिल्ली आना पड़ता था, उसे अब अपने राज्य में ही आधुनिक इलाज उपलब्ध हो रहा है।

20 विश्वविद्यालयों से हजारों संस्थानों तक

1947 में पूरे देश में लगभग 20 विश्वविद्यालय थे। उच्च शिक्षा केवल चुनिंदा लोगों तक सीमित थी।
आज भारत में
- 1200 से अधिक विश्वविद्यालय
- 45 हजार से अधिक कॉलेज
- IIT
- IIM
- NIT
- IISER
- AIIMS
- केंद्रीय विश्वविद्यालय
- डिजिटल विश्वविद्यालय

जैसे संस्थानों का विशाल नेटवर्क तैयार हो चुका है। आज भारत दुनिया को डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, आईटी विशेषज्ञ और उद्यमी दे रहा है।

भाप के इंजन से वंदे भारत तक

भारत की पहचान उसकी रेलवे रही है। 1947 में रेलवे नेटवर्क लगभग 53 हजार किलोमीटर था। स्टेशन पुराने थे। सिग्नलिंग प्रणाली सीमित थी। भाप के इंजन चलते थे। आज भारतीय रेलवे विश्व का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है। लगभग 68 हजार किलोमीटर रेलमार्ग 98 प्रतिशत से अधिक विद्युतीकरण, वंदे भारत एक्सप्रेस, अमृत भारत स्टेशन योजना, Dedicated Freight Corridor, कवच सुरक्षा प्रणाली, बुलेट ट्रेन परियोजना, आधुनिक स्टेशन, डिजिटल टिकटिंग, मोबाइल ऐप, आज रेलवे केवल यात्रा का साधन नहीं बल्कि भारत की आर्थिक धुरी बन चुकी है।

जहाँ कभी कच्चे रास्ते थे, वहाँ आज एक्सप्रेसवे

1947 में देश का अधिकांश ग्रामीण भारत सड़क संपर्क से वंचित था। बरसात में हजारों गाँव कट जाते थे। आज भारत के पास विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क है। राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई कई गुना बढ़ चुकी है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे, पूर्वांचल एक्सप्रेसवे, गंगा एक्सप्रेसवे, समृद्धि महामार्ग, दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे जैसी परियोजनाएँ भारत की बदलती तस्वीर प्रस्तुत कर रही हैं। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने लाखों ग्रामीण परिवारों को पहली बार पक्की सड़क से जोड़ा।

पुल और सुरंगें: विकास की नई पहचान

कभी बड़ी नदियाँ विकास की राह में बाधा थीं। आज भारत विश्वस्तरीय पुल और सुरंगें बना रहा है। अटल सेतु, चिनाब रेल ब्रिज, अटल टनल, जोजिला टनल, सुदर्शन सेतु, बोगीबील ब्रिज जैसी परियोजनाएँ केवल इंजीनियरिंग उपलब्धियाँ नहीं बल्कि नए भारत के आत्मविश्वास का प्रतीक हैं। जहाँ कभी एक नदी पार करने में घंटों लग जाते थे, आज वही दूरी मिनटों में पूरी हो रही है।

राजा-महाराजाओं से आम नागरिक तक

1947 में हवाई यात्रा केवल संपन्न लोगों तक सीमित थी। देश में गिने-चुने हवाई अड्डे थे। आज भारत में 160 से अधिक हवाई अड्डे परिचालन में हैं। UDAN योजना ने छोटे शहरों को हवाई सेवा से जोड़ दिया। आज पहली बार विमान यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। दूर-दराज़ के शहर अब कुछ घंटों में एक-दूसरे से जुड़ चुके हैं।

"बात हिंदुस्तान की" परिवार की ओर से समस्त सम्मानित पाठकों, विज्ञापनदाताओं, सहयोगियों एवं देशवासियों को 80 वां स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।
आइए, हम उन वीर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धापूर्वक नमन करें, जिनके त्याग, बलिदान और संघर्ष के कारण हमें आज़ादी का अमूल्य उपहार मिला। राष्ट्र की एकता, अखंडता, समरसता और प्रगति के लिए सदैव समर्पित रहने का संकल्प लें।
जय हिंद! वंदे मातरम्! - बात हिंदुस्तान की परिवार

1947 का भारत और 2026 का भारत

अंतरिक्ष की उड़ान, डिजिटल क्रांति और विश्व मंच पर भारत की नई पहचान

"जिस देश में कभी एक टेलीफोन कनेक्शन के लिए वर्षों इंतज़ार करना पड़ता था, आज उसी देश में लोग मोबाइल से कुछ सेकंड में करोड़ों रुपये का लेन-देन कर रहे हैं। जिस भारत ने कभी अंतरिक्ष विज्ञान की शुरुआत उधार के उपकरणों और सीमित संसाधनों से की थी, आज वही भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव तक पहुँचने वाला पहला देश बन चुका है।"

साइकिल से चंद्रयान तक की ऐतिहासिक यात्रा

1960 के दशक का भारत, केरल के थुंबा में एक छोटा-सा प्रक्षेपण केंद्र। वैज्ञानिकों के पास आधुनिक संसाधन नहीं थे। रॉकेट के पुर्जे कभी साइकिल पर तो कभी बैलगाड़ी से लॉन्चिंग स्टेशन तक पहुँचाए जाते थे। उस समय शायद किसी ने नहीं सोचा होगा कि यही देश एक दिन चाँद और सूर्य तक अपने मिशन भेजेगा। आज भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) पूरी दुनिया के लिए भरोसे का नाम बन चुका है। 1975 में भारत का पहला उपग्रह आर्यभट्ट अंतरिक्ष में पहुँचा। इसके बाद रोहिणी, INSAT, IRS, PSLV और GSLV जैसे मिशनों ने भारत की अंतरिक्ष क्षमता को नई ऊँचाई दी। 2014 में भारत का मंगलयान पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में पहुँचा। 2023 में चंद्रयान-3 ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग कर इतिहास रच दिया। उसी वर्ष आदित्य-L1 सूर्य के अध्ययन के लिए भेजा गया। अब पूरा देश गगनयान मिशन का इंतजार कर रहा है, जिसके माध्यम से भारतीय अंतरिक्ष यात्री स्वदेशी मिशन से अंतरिक्ष की यात्रा करेंगे। आज ISRO केवल वैज्ञानिक संस्था नहीं बल्कि भारत के आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन चुका है।

ट्रंक कॉल से 5G तक का सफर

आज से 50-60 वर्ष पहले यदि किसी रिश्तेदार से दूसरे शहर बात करनी होती थी, तो पहले ट्रंक कॉल बुक करानी पड़ती थी। घंटों इंतज़ार करना पड़ता था। फोन मिल जाए तो लोग जल्दी-जल्दी बात पूरी करते थे। गाँवों में टेलीफोन होना प्रतिष्ठा की बात मानी जाती थी। आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा दूरसंचार बाजार है। 120 करोड़ से अधिक मोबाइल कनेक्शन। 80 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता। 5G सेवाएँ देश के अधिकांश हिस्सों तक पहुँच चुकी हैं। अब वीडियो कॉल, ऑनलाइन पढ़ाई, डिजिटल बैंकिंग, टेलीमेडिसिन और घर बैठे सरकारी सेवाएँ आम बात हैं। जिस मोबाइल को कभी विलासिता माना जाता था, आज वही गरीब से गरीब व्यक्ति की जेब में दिखाई देता है।

कागज़ से क्लिक तक

एक समय सरकारी दफ्तरों में फाइलों का ढेर लगा रहता था। बैंक में पूरा दिन निकल जाता था। बिजली बिल जमा करने के लिए लाइन लगानी पड़ती थी। आज तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी है।
- आधार
- UPI
- डिजिलॉकर
- FASTag
- CoWIN
- GST Network
- ई-कोर्ट
- ऑनलाइन पासपोर्ट
- डिजिटल भूमि अभिलेख

जैसी सेवाओं ने आम नागरिक का जीवन आसान बना दिया है। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा डिजिटल भुगतान इकोसिस्टम बन चुका है। चाय की दुकान से लेकर बड़े मॉल तक... QR Code हर जगह दिखाई देता है। हर महीने अरबों डिजिटल ट्रांजेक्शन भारत में हो रहे हैं। यह बदलाव केवल तकनीक का नहीं बल्कि सोच का भी है।

नौकरी माँगने से नौकरी देने तक

एक समय युवाओं का सपना केवल सरकारी नौकरी हुआ करता था। आज भारत का युवा खुद कंपनी शुरू कर रहा है। 2016 के बाद स्टार्टअप इकोसिस्टम में अभूतपूर्व तेजी आई। आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है। एक लाख से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप।
- 100 से अधिक यूनिकॉर्न
- कंपनियाँ।
- फिनटेक
- एग्रीटेक
- एडटेक
- हेल्थटेक
- स्पेस टेक
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस
- रोबोटिक्स

जैसे क्षेत्रों में भारतीय युवा पूरी दुनिया को समाधान दे रहे हैं। आज लाखों युवाओं को रोजगार स्टार्टअप से मिल रहा है।

भारत का डंका अब दुनिया में बजता है

एक समय भारतीय कंपनियाँ केवल घरेलू बाजार तक सीमित थीं। आज... टाटा समूह 100 से अधिक देशों में कार्य कर रहा है। रिलायंस ऊर्जा, दूरसंचार और रिटेल में वैश्विक पहचान बना चुका है। TCS दुनिया की सबसे बड़ी आईटी कंपनियों में शामिल है। Infosys और Wipro वैश्विक डिजिटल परिवर्तन की अगुवाई कर रहे हैं। Mahindra, Larsen & Toubro, Sun Pharma, Bharat Forge, Adani Group जैसी भारतीय कंपनियाँ विश्व स्तर पर निवेश कर रही हैं। भारत अब केवल बाजार नहीं बल्कि वैश्विक उद्योग का महत्वपूर्ण साझेदार बन चुका है।

आयातक से निर्यातक

एक समय भारत लगभग सभी मोबाइल फोन विदेशों से आयात करता था। आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल फोन निर्माता देश बन चुका है। Apple सहित कई वैश्विक ब्रांड भारत में उत्पादन कर रहे हैं। मोबाइल निर्यात लगातार नए रिकॉर्ड बना रहा है। मेक इन इंडिया ने इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण को नई दिशा दी है।

आत्मनिर्भर भारत की नई ताकत

1947 में भारत अधिकांश रक्षा उपकरण विदेशों से खरीदता था। आज भारत...
तेजस लड़ाकू विमान बना रहा है। INS विक्रांत जैसा स्वदेशी विमानवाहक पोत तैयार कर चुका है। ब्रह्मोस मिसाइल दुनिया की सबसे तेज सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों में गिनी जाती है। आकाश, पिनाका, प्रचंड, अर्जुन टैंक, धनुष तोप जैसी प्रणालियाँ भारत की बढ़ती क्षमता का प्रमाण हैं। रक्षा निर्यात भी लगातार नए रिकॉर्ड बना रहा है।

विश्वस्तरीय स्टेडियम और नई खेल संस्कृति

एक समय खेल सुविधाएँ बहुत सीमित थीं। आज भारत विश्वस्तरीय खेल अवसंरचना विकसित कर रहा है। अहमदाबाद का नरेंद्र मोदी स्टेडियम दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम है। हॉकी, एथलेटिक्स, शूटिंग, बैडमिंटन और कुश्ती के लिए आधुनिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए गए हैं। खेलो इंडिया अभियान ने ग्रामीण और छोटे शहरों की प्रतिभाओं को राष्ट्रीय मंच दिया है। ओलंपिक और पैरालंपिक में भारत का प्रदर्शन लगातार बेहतर हुआ है। नीरज चोपड़ा का ओलंपिक स्वर्ण, पैरा खिलाड़ियों की उपलब्धियाँ और महिला खिलाड़ियों का बढ़ता दबदबा नए भारत की खेल संस्कृति का परिचायक है।

दुनिया तक पहुँची भारतीय संस्कृति

एक समय भारतीय फिल्मों का दायरा सीमित था। आज भारतीय सिनेमा और OTT प्लेटफॉर्म दुनिया भर में देखे जा रहे हैं। भारतीय संगीत, योग, आयुर्वेद और सांस्कृतिक विरासत वैश्विक पहचान बना चुके हैं।

युवाओं का भारत, नवाचार का भारत

आज दुनिया की सबसे युवा आबादी वाले देशों में भारत शामिल है।
यही युवा...
AI विकसित कर रहा है।
ड्रोन बना रहा है।
सैटेलाइट डिजाइन कर रहा है।
गेमिंग इंडस्ट्री खड़ी कर रहा है।
नई कंपनियाँ शुरू कर रहा है।
यही युवा आने वाले विकसित भारत की सबसे बड़ी ताकत है।

विकसित भारत-2047 विश्व मंच पर उभरता भारत

"79 वर्ष पहले भारत अपनी आज़ादी बचाने और अपने पैरों पर खड़े होने की लड़ाई लड़ रहा था। आज वही भारत दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं, वैश्विक कूटनीति, विज्ञान, तकनीक और संस्कृति के केंद्र में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है।"
स्वतंत्रता के बाद भारत की सबसे बड़ी चुनौती केवल देश का पुनर्निर्माण नहीं थी बल्कि दुनिया के सामने अपनी अलग पहचान बनाना भी था। कभी विदेशी सहायता पर निर्भर रहने वाला भारत आज अनेक देशों का विकास साझेदार है। कभी वैश्विक मंचों पर अपनी बात रखने के लिए संघर्ष करने वाला भारत आज विश्व के प्रमुख निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विश्व मंच पर भारत की बढ़ती ताकत

1947 में भारत एक नया स्वतंत्र राष्ट्र था। संसाधन सीमित थे और अंतरराष्ट्रीय मंच पर उसकी भूमिका भी सीमित थी। आज भारत संयुक्त राष्ट्र, G-20, BRICS, QUAD, SCO जैसे वैश्विक मंचों पर प्रभावशाली भूमिका निभा रहा है। 2023 में भारत की G-20 अध्यक्षता ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। नई दिल्ली घोषणा पर आम सहमति बनना भारत की कूटनीतिक सफलता माना गया। आज दुनिया भारत को केवल एक बड़ा बाजार नहीं, बल्कि वैश्विक स्थिरता, आर्थिक विकास और रणनीतिक सहयोग के महत्वपूर्ण साझेदार के रूप में देख रही है।

संतुलन और विश्वास की नई पहचान

एक समय भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रमुख चेहरा था। आज भारत अमेरिका, फ्रांस, जापान, ऑस्ट्रेलिया, रूस, खाड़ी देशों, अफ्रीका और यूरोप सहित दुनिया के अनेक देशों के साथ मजबूत रणनीतिक संबंध रखता है। वैक्सीन मैत्री अभियान के दौरान भारत ने अनेक देशों को टीके उपलब्ध कराए। प्राकृतिक आपदाओं और संकट के समय भारत ने कई देशों तक राहत पहुँचाकर "मानवता पहले" की नीति को मजबूत किया।

नई उड़ान की कहानी

1947 में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी सीमित थी। आज भारत की महिलाएँ हर क्षेत्र में नई पहचान बना रही हैं। महिला वैज्ञानिक चंद्रयान मिशन का नेतृत्व करती हैं। महिला फाइटर पायलट भारतीय वायुसेना की ताकत बढ़ा रही हैं। महिला खिलाड़ी ओलंपिक और विश्व प्रतियोगिताओं में देश का नाम रोशन कर रही हैं।
गाँवों की स्वयं सहायता समूहों से लेकर बड़ी कॉरपोरेट कंपनियों तक महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ी है। आज भारत की बेटियाँ केवल सपने नहीं देख रहीं, बल्कि उन्हें साकार भी कर रही हैं।

विरासत से विकास तक

भारत केवल आर्थिक शक्ति नहीं, बल्कि हजारों वर्षों पुरानी सभ्यता भी है। पिछले वर्षों में धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है।
काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर ने प्राचीन नगरी को नया स्वरूप दिया। महाकाल लोक ने उज्जैन को नई पहचान दी। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण ने करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था को नया केंद्र दिया। केदारनाथ धाम का पुनर्विकास, चारधाम सड़क परियोजना, करतारपुर कॉरिडोर और अनेक तीर्थ स्थलों के आधुनिकीकरण ने धार्मिक पर्यटन को भी नई गति दी। आज भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक विकास के साथ जोड़ने का प्रयास कर रहा है।

दुनिया को आकर्षित करता भारत

1947 में पर्यटन सुविधाएँ सीमित थीं। आज भारत में आधुनिक एयरपोर्ट, बेहतर सड़कें, होटल, रोपवे, धार्मिक कॉरिडोर, ई-वीजा और डिजिटल सुविधाओं ने पर्यटन को नई ऊँचाई दी है। काशी, अयोध्या, सोमनाथ, पुरी, बद्रीनाथ, केदारनाथ, वैष्णो देवी, हम्पी, खजुराहो, स्टेच्यू ऑफ यूनिटी और पूर्वोत्तर भारत जैसे क्षेत्र घरेलू और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं।

ऊर्जा में आत्मनिर्भरता

आज़ादी के समय भारत की ऊर्जा आवश्यकताएँ सीमित थीं। आज बढ़ती आबादी और उद्योगों की जरूरतों के साथ ऊर्जा की मांग भी कई गुना बढ़ चुकी है। भारत आज दुनिया के सबसे बड़े सौर ऊर्जा उत्पादक देशों में शामिल है। सोलर पार्क, पवन ऊर्जा परियोजनाएँ, ग्रीन हाइड्रोजन मिशन और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देकर स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में तेज़ी से कदम बढ़ाए जा रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance) जैसी पहल भारत की वैश्विक नेतृत्व क्षमता को भी दर्शाती है।

विकसित भारत की सबसे बड़ी पूंजी

भारत दुनिया की सबसे युवा आबादी वाले देशों में से एक है। यही युवा आज स्टार्टअप बना रहे हैं। नई तकनीक विकसित कर रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), रोबोटिक्स, क्वांटम कंप्यूटिंग, साइबर सुरक्षा और अंतरिक्ष तकनीक में काम कर रहे हैं। विश्व की बड़ी कंपनियों का नेतृत्व भी भारतीय मूल के अनेक पेशेवर कर रहे हैं। यह मानव संसाधन भारत की सबसे बड़ी ताकत है।

1947 बनाम 2026

1947
- सीमित उद्योग
- लगभग 20 विश्वविद्यालय
- एक AIIMS भी नहीं (1956 में
- पहला AIIMS)
- भाप इंजन आधारित रेलवे
- मेट्रो रेल नहीं
- सीमित एयरपोर्ट
- टेलीफोन दुर्लभ
- विदेशी खाद्यान्न पर निर्भरता
- सीमित अंतरिक्ष कार्यक्रम
- सीमित वैश्विक प्रभाव

2026
- विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में भारत
- 1200 से अधिक विश्वविद्यालय
- अनेक AIIMS संचालित या विकसित
- आधुनिक रेलवे, वंदे भारत और समर्पित माल गलियारे
- 26 शहरों में मेट्रो नेटवर्क
- 160 से अधिक परिचालन वाले हवाई अड्डे
- 5G और डिजिटल कनेक्टिविटी
- खाद्यान्न उत्पादन में विश्व के अग्रणी देशों में स्थान
- चंद्रयान, मंगलयान,
- आदित्य-L1 जैसे मिशन
- G-20 सहित वैश्विक मंचों पर प्रभावशाली भूमिका

विकसित भारत-2047: अगला लक्ष्य

भारत अब केवल विकासशील राष्ट्र नहीं रहना चाहता। लक्ष्य है–
- विश्वस्तरीय शिक्षा
- बेहतर स्वास्थ्य
- आधुनिक बुनियादी ढाँचा
- स्वच्छ ऊर्जा
- आत्मनिर्भर रक्षा
- उन्नत विनिर्माण
- वैश्विक नवाचार केंद्र
- रोजगार सृजन

और ऐसा विकास जिसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। 2047 में जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा, तब लक्ष्य केवल आर्थिक महाशक्ति बनने का नहीं, बल्कि ऐसा विकसित राष्ट्र बनने का है जहाँ विकास, अवसर और सम्मान हर नागरिक तक पहुँचे।

आज़ादी का अर्थ केवल स्वतंत्र होना नहीं

79 वर्षों की यह यात्रा हमें बताती है कि राष्ट्र केवल सरकारों से नहीं बनता। राष्ट्र बनता है– सीमा पर खड़े सैनिक से, खेत में मेहनत करते किसान से, प्रयोगशाला में शोध करते वैज्ञानिक से, कारखाने में काम करते श्रमिक से, नई कंपनी शुरू करने वाले युवा से, कक्षा में पढ़ाने वाले शिक्षक से और ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाने वाले प्रत्येक नागरिक से।

तारकेश्वर मंदिर की पौराणिक कथा और कांवड़ यात्रा

पुष्पा साउ, हुगली : श्रावण मास शुरू होते ही पश्चिम बंगाल के प्रसिद्ध तारकेश्वर महादेव मंदिर में लाखों श्रद्धालुओं की आस्था उमड़ पड़ती है। 'बोल बम' और 'हर-हर महादेव' के जयघोष से पूरा मार्ग गूंज उठता है। हजारों-लाखों कांवड़िए गंगा से पवित्र जल भरकर कई किलोमीटर की कठिन पैदल यात्रा पूरी करते हुए भगवान तारकनाथ का जलाभिषेक करते हैं। यह यात्रा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि श्रद्धा, तपस्या, संयम और विश्वास का प्रतीक मानी जाती है।

तारकेश्वर धाम का इतिहास

पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में स्थित तारकेश्वर मंदिर राज्य के सबसे प्रसिद्ध शिवधामों में से एक है। यह मंदिर लगभग 300 वर्ष पुराना माना जाता है। ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार इसका निर्माण 18वीं शताब्दी में स्थानीय राजाओं के संरक्षण में कराया गया था। समय के साथ यह मंदिर बंगाल ही नहीं बल्कि पूरे पूर्वी भारत के प्रमुख शिव तीर्थों में शामिल हो गया। आम दिनों में हजारों श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए आते हैं, जबकि श्रावण महीने में यह संख्या लाखों तक पहुंच जाती है।

क्या है मंदिर की पौराणिक कथा?

तारकेश्वर धाम की सबसे प्रसिद्ध कथा भगवान शिव के स्वयंभू शिवलिंग से जुड़ी है। मान्यता है कि बहुत पहले इस क्षेत्र में घना जंगल हुआ करता था। यहां एक गाय प्रतिदिन जंगल में जाकर एक स्थान पर अपने आप दूध बहा देती थी। जब लोगों ने इसका कारण जानना चाहा तो खुदाई कराई गई। खुदाई में वहां से स्वयंभू शिवलिंग प्रकट हुआ। ग्रामीणों ने इसे भगवान शिव का चमत्कार माना। बाद में इस स्थान पर मंदिर का निर्माण कराया गया और भगवान शिव 'तारकनाथ' के नाम से पूजे जाने लगे। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार 'तारक' का अर्थ है—जो संसार रूपी भवसागर से पार लगाते हैं। इसलिए माना जाता है कि भगवान तारकनाथ अपने भक्तों को सभी कष्टों से मुक्ति प्रदान करते हैं।

क्यों कहा जाता है तारकेश्वर?

धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान शिव का 'तारक' स्वरूप मोक्ष प्रदान करने वाला माना जाता है। कहा जाता है कि मृत्यु के समय भगवान शिव अपने भक्तों को तारक मंत्र प्रदान कर उन्हें मोक्ष देते हैं। इसी कारण यहां विराजमान शिव को तारकनाथ कहा जाता है और मंदिर का नाम पड़ा तारकेश्वर।

श्रावण मास में क्यों बढ़ जाता है महत्व?

हिंदू धर्म में श्रावण मास भगवान शिव को अत्यंत प्रिय माना गया है। पुराणों के अनुसार समुद्र मंथन के समय निकले विष को भगवान शिव ने अपने कंठ में धारण किया था। इसके बाद देवताओं ने उन्हें जल अर्पित कर विष की गर्मी को शांत किया। तभी से श्रावण में शिवलिंग पर जल चढ़ाने की परंपरा चली आ रही है। इसी विश्वास के साथ लाखों श्रद्धालु गंगाजल लेकर तारकेश्वर पहुंचते हैं।

कांवड़िए कहां से लाते हैं गंगाजल?

पश्चिम बंगाल में अधिकांश श्रद्धालु हुगली जिले के शिओराफुली (Sheoraphuli) गंगा घाट से गंगाजल भरते हैं। कुछ श्रद्धालु बैद्यबाटी, श्रीरामपुर और अन्य गंगा घाटों से भी जल लेते हैं, लेकिन सबसे अधिक भीड़ शिओराफुली घाट पर देखने को मिलती है। गंगाजल भरने के बाद श्रद्धालु बिना कांवड़ जमीन पर रखे लगातार पैदल चलते हुए तारकेश्वर मंदिर पहुंचते हैं।

कितनी होती है यात्रा?

शिओराफुली गंगा घाट से तारकेश्वर मंदिर की दूरी लगभग 30 से 35 किलोमीटर मानी जाती है। अधिकांश श्रद्धालु यह दूरी 8 से 12 घंटे में पूरी करते हैं। कुछ श्रद्धालु पूरी रात पैदल चलकर सुबह मंदिर पहुंचते हैं। वहीं 'डाक बम' कहलाने वाले श्रद्धालु बिना रुके दौड़ते हुए 4 से 6 घंटे में यात्रा पूरी कर लेते हैं।

कांवड़ यात्रा के नियम

श्रद्धालु यात्रा के दौरान कई नियमों का पालन करते हैं:
गंगाजल भरने के बाद कांवड़ जमीन पर नहीं रखते।
पूरे मार्ग में नंगे पैर चलते हैं।
सात्विक भोजन करते हैं।
भगवान शिव के भजन और 'बोल बम' का जाप करते रहते हैं। कई श्रद्धालु मौन व्रत भी रखते हैं। मंदिर पहुंचने तक अनुशासन बनाए रखते हैं।

रास्ते भर सेवा शिविर

श्रावण मास में पूरे मार्ग पर विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संगठन सेवा शिविर लगाते हैं।इन शिविरों में:
- पीने के पानी की व्यवस्था
- शरबत वितरण
- प्राथमिक चिकित्सा
- विश्राम स्थल
- भोजन प्रसाद
- एम्बुलेंस सेवा

जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

प्रशासन की विशेष तैयारी

- श्रावण मास में लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए प्रशासन व्यापक इंतजाम करता है।
- अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया जाता है।
- सीसीटीवी कैमरों से निगरानी होती है।
- मेडिकल कैंप लगाए जाते हैं।
- ट्रैफिक की विशेष व्यवस्था की जाती है।
- मंदिर परिसर में बैरिकेडिंग की जाती है।
- आपदा प्रबंधन दल और दमकल कर्मी भी तैनात रहते हैं।

मंदिर में जलाभिषेक की परंपरा

श्रद्धालु मंदिर पहुंचकर पहले भगवान तारकनाथ के दर्शन करते हैं। इसके बाद गंगाजल से शिवलिंग का अभिषेक करते हैं। इसके बाद बेलपत्र, धतूरा, आक, दूध, चंदन, फूल और प्रसाद अर्पित किया जाता है। मान्यता है कि सच्चे मन से जलाभिषेक करने वाले भक्त की मनोकामना अवश्य पूरी होती है।

देशभर से आते हैं श्रद्धालु

हालांकि अधिकांश श्रद्धालु पश्चिम बंगाल से आते हैं, लेकिन झारखंड, बिहार, ओडिशा, असम और उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों से भी शिवभक्त तारकेश्वर पहुंचते हैं। कई श्रद्धालु हर वर्ष नियमित रूप से यह यात्रा करते हैं और इसे अपने जीवन का सबसे बड़ा धार्मिक अनुष्ठान मानते हैं। कई श्रद्धालु पूरे वर्ष इस यात्रा का इंतजार करते हैं। श्रावण के प्रत्येक सोमवार को तारकेश्वर धाम में विशेष भीड़ उमड़ती है और मंदिर परिसर पूरी तरह शिवमय हो जाता है।

नीट के सफल छात्रों का सम्मान
मुख्यमंत्री शुभेंदु दिया मेहनत और लगन का संदेश

देशभर में नीट परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक को लेकर चल रहे विवाद के बीच पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने नवान्न सभागार में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में नीट परीक्षा में सफल 100 मेधावी छात्रों को सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने छात्रों के साथ अल्पाहार किया, उनसे संवाद किया और उनके साथ सेल्फी भी ली।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने सफल छात्रों को उनकी उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा कि कठिन परिश्रम, अनुशासन और आत्मविश्वास ही सफलता की सबसे बड़ी कुंजी है। उन्होंने छात्रों को भविष्य की चुनौतियों का सामना पूरे मनोयोग और ईमानदारी से करने के लिए प्रेरित किया।

सम्मानित छात्रों ने भी अपनी सफलता का श्रेय नियमित अध्ययन और निरंतर मेहनत को दिया। छात्रों का कहना था कि परीक्षा को लेकर चाहे कितनी भी चर्चाएं या विवाद हों, यदि कोई विद्यार्थी पूरी लगन से पढ़ाई करता है और विषय को अच्छी तरह समझकर अपने मस्तिष्क में आत्मसात कर लेता है, तो वही ज्ञान समय आने पर सफलता दिलाता है।

छात्रों ने अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे अभ्यर्थियों से भी अपील की कि वे किसी भी प्रकार की अफवाह या विवाद से प्रभावित हुए बिना अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर केंद्रित रखें। उनका कहना था कि एकाग्रचित्त होकर की गई मेहनत और सही तैयारी ही किसी भी परीक्षा में सफलता का सबसे मजबूत आधार है।

कार्यक्रम के अंत में मुख्यमंत्री ने सभी सफल विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। सम्मान समारोह का माहौल उत्साहपूर्ण रहा और छात्रों ने मुख्यमंत्री के साथ बिताए गए इन पलों को यादगार बताया।

रक्त माफिया और मेडिकल माफिया को बख्शा नहीं जाएगा- मंत्री उमेश राय

स्वास्थ्य भवन के निर्देश पर हावड़ा के एक निजी ब्लड बैंक में जिला स्वास्थ्य विभाग ने छापेमारी की। आरोप है कि विभिन्न रक्तदान शिविरों से एकत्र किए गए बड़ी मात्रा में रक्त को अवैध रूप से दूसरे राज्यों में भेजा गया। प्रारंभिक जांच में लगभग 10 हजार यूनिट रक्त और प्लाज्मा की अनियमित तरीके से तस्करी किए जाने का आरोप सामने आया है।

स्वास्थ्य विभाग के सूत्रों के अनुसार, इस ब्लड बैंक के खिलाफ लंबे समय से अनियमितताओं की शिकायतें मिल रही थीं। आरोप था कि रक्तदान शिविरों से एकत्र किए गए रक्त का सही हिसाब नहीं रखा गया और निर्धारित नियमों का पालन किए बिना उसे अन्य राज्यों में भेजा गया। स्वास्थ्य भवन के निर्देश के बाद जिला स्वास्थ्य विभाग की एक विशेष टीम ने ब्लड बैंक पहुंचकर दस्तावेजों, स्टॉक रजिस्टर तथा रक्त संग्रह और आपूर्ति से जुड़े रिकॉर्ड की जांच की। जांच के दौरान कई महत्वपूर्ण दस्तावेज जब्त किए गए हैं।

स्वास्थ्य विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि सभी दस्तावेजों की गहन जांच कर तथ्यों का सत्यापन किया जाएगा। यदि अनियमितता के आरोप सही पाए जाते हैं, तो संबंधित लोगों के खिलाफ कानून के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। पूरे मामले की जांच जारी है।

उक्त मामले पर पश्चिम बंगाल सरकार के मंत्री उमेश राय ने हावड़ा के एक थैलेसीमिया अस्पताल और ब्लड बैंक में सामने आए कथित रक्त एवं प्लाज्मा बिक्री मामले को लेकर पूर्ववर्ती तृणमूल कांग्रेस सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि तृणमूल शासन के दौरान भ्रष्टाचार समाज के लगभग हर क्षेत्र में फैला हुआ था और अब स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े गंभीर अनियमितताओं के मामले भी सामने आ रहे हैं।

उमेश राय ने कहा कि गरीबों के राशन, विभिन्न सरकारी योजनाओं, गौ तस्करी और कोयला तस्करी जैसे मामलों के बाद अब रक्त और प्लाज्मा की कथित अवैध बिक्री का मामला सामने आया है। उनके अनुसार, स्वास्थ्य विभाग की जांच के दौरान हावड़ा के थैलेसीमिया अस्पताल से ऐसे दस्तावेज मिले हैं, जिनसे बड़ी मात्रा में रक्त की चोरी और उसकी बिक्री तथा प्लाज्मा को अन्य राज्यों में भेजे जाने के संकेत मिले हैं।

मंत्री ने कहा कि इस पूरे मामले में कौन-कौन लोग शामिल हैं, इसकी विस्तृत जांच की जा रही है। जांच के दौरान कई महत्वपूर्ण दस्तावेज बरामद हुए हैं और सभी आरोपियों की पहचान कर उनके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य के अन्य हिस्सों में भी यदि इस तरह की घटनाएं हुई हैं, तो उनकी भी जांच कर दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।

उमेश राय ने दावा किया कि यदि राज्य में भाजपा की सरकार नहीं आती तो इस तरह का मामला कभी सामने नहीं आता और रक्तदान करने वाले लोगों को यह भी पता नहीं चल पाता कि उनके द्वारा दान किया गया रक्त कथित रूप से बेचा जा रहा था। उन्होंने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस के शासनकाल में 'रक्त माफिया' और 'मेडिकल माफिया' सक्रिय थे, जिन्होंने लोगों की भावनाओं और स्वास्थ्य व्यवस्था का दुरुपयोग कर अवैध कमाई की। मामले की जांच जारी है और स्वास्थ्य विभाग ने दस्तावेजों के आधार पर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

हावड़ा में MSME के विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

सोनी कुमारी द्वा: सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ाने और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को मजबूत करने के उद्देश्य से "Enhancing Productivity & Global Competitiveness of MSMEs" विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हावड़ा के कोलाबागान स्थित एक रेस्तरां में किया गया।

इस सम्मेलन का आयोजन फेडरेशन ऑफ स्मॉल एंड मीडियम इंडस्ट्रीज, वेस्ट बंगाल (FOSMI) ने किया, जबकि इसमें भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय का सहयोग रहा। सम्मेलन में देश-विदेश के उद्योग विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और नीति-निर्माताओं ने भाग लिया।सम्मेलन में इस बात पर विस्तृत चर्चा हुई कि नई तकनीक, कौशल विकास और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से MSME क्षेत्र को किस प्रकार और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है।सम्मेलन के प्रमुख अंतरराष्ट्रीय वक्ताओं में ताइवान टेक्निकल टेक्सटाइल एसोसिएशन के उप महासचिव डॉ. हॉवर्ड लो, सुल्तान इस्लामिक यूनिवर्सिटी, इंडोनेशिया की प्रोफेसर डॉ. मिसबाह जुला एलिजाबेथ, वियतनाम नेशनल यूनिवर्सिटी के मानव संसाधन प्रबंधन एवं व्यवसाय विभाग के प्राध्यापक डॉ. नांग ट्रान सहित कई विशिष्ट विशेषज्ञ शामिल थे।वक्ताओं ने MSME क्षेत्र के लिए सरकारी नीतियों, निर्यात की संभावनाओं, सतत उत्पादन (सस्टेनेबल मैन्युफैक्चरिंग) तथा सर्कुलर इकोनॉमी के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि केले से कपड़ा बनाने और अनानास के पत्ते से जूता बनाने कैसे बनाया जाता है इस बात पर भी काफी गंभीरता से विचार किया गया।इस अवसर पर राज्य के उद्योग, वाणिज्य एवं उपभोक्ता मामले विभाग की राज्य मंत्री मौमिता विश्वास मिश्रा ने कहा कि पिछले 50 वर्षों में पश्चिम बंगाल में उद्योगों का विकास नहीं हुआ, बल्कि उद्योगों को राज्य से बाहर जाने के लिए मजबूर किया गया। अब राज्य सरकार उद्योगों का खोया हुआ गौरव वापस लाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि उलुबेड़िया के शटल कॉक सहित कई सूक्ष्म एवं मध्यम उद्योग, जो बंद होने की कगार पर पहुंच गए थे, उनका पुनर्जीवन किया जा रहा है। सरकार सभी पहलुओं की समीक्षा कर रही है। राज्य में नए उद्योग आने शुरू हो गए हैं, बड़े पैमाने पर निवेश हो रहा है, रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं और उद्योगों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जा रहा है।मंत्री ने घोषणा की कि एक महीने के भीतर राज्य सरकार नई औद्योगिक नीति की घोषणा करेगी। इस नीति में उद्यमियों को सुविधाएं प्रदान करने के लिए कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की जाएंगी, ताकि वे बिना किसी भय के पश्चिम बंगाल में उद्योग स्थापित कर सकें। साथ ही उन्होंने कहा कि बंगाल में व्यवसाय करने के लिए वेबसाइट को किसी भी तरह का कोई रंगदारी नहीं देना होगा ना ही उन्हें सिंडिकेट का कोई डर होगा यह सरकार जीरो टॉलरेंस नीति के साथ काम कर रही है और यहां पर जो लोग व्यापार करना चाहते हैं खुले मन से कर सकते हैं किसी भी तरह का कोई भय नहीं है सरकार की ओर से उन्हें हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी।

उद्योग मंत्री तपस रॉय से मिले एमएआईएमएफ के प्रतिनिधि

महा ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन (MAIMF) के संस्थापक एवं महासचिव किशन किला के नेतृत्व में फेडरेशन के एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने पश्चिम बंगाल सरकार के उद्योग मंत्री तपस रॉय से शिष्टाचार भेंट कर राज्य के औद्योगिक विकास, निवेश संवर्धन तथा उद्योग जगत में मारवाड़ी समाज की सक्रिय भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की।

प्रतिनिधिमंडल में फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रतन लाल अग्रवाल, प्रख्यात उद्योगपति अनिल विजयवर्गीय, निर्मल कुमार अग्रवाल तथा अमित केड़िया शामिल थे।

बैठक के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने पश्चिम बंगाल में उद्योग एवं व्यापार की अपार संभावनाओं पर चर्चा करते हुए राज्य के औद्योगिक विकास में मारवाड़ी समाज के उद्यमियों और निवेशकों की अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित करने की इच्छा व्यक्त की।

प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि उद्योग, व्यापार और निवेश के क्षेत्र में समाज का व्यापक अनुभव तथा उद्यमशीलता राज्य की आर्थिक प्रगति को नई गति प्रदान कर सकती है। साथ ही उन्होंने सरकार के साथ मिलकर औद्योगिक विकास की दिशा में सकारात्मक सहयोग देने की प्रतिबद्धता भी जताई।

उद्योग मंत्री तपस रॉय ने राज्य सरकार द्वारा उद्योगों को बढ़ावा देने, नए निवेश आकर्षित करने, रोजगार के अवसर सृजित करने तथा उद्योग-अनुकूल वातावरण तैयार करने के लिए उठाए गए विभिन्न नीतिगत कदमों और योजनाओं की जानकारी प्रतिनिधिमंडल को दी।

उन्होंने उद्योग जगत से पश्चिम बंगाल में अधिक निवेश करने का आह्वान करते हुए भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार निवेशकों और उद्योगों को हर संभव सहयोग उपलब्ध कराने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

बैठक सौहार्दपूर्ण और सकारात्मक माहौल में संपन्न हुई।

दोनों पक्षों ने पश्चिम बंगाल को औद्योगिक दृष्टि से अधिक सशक्त, निवेश-अनुकूल और समृद्ध बनाने के उद्देश्य से भविष्य में भी निरंतर संवाद, सहयोग और सहभागिता बनाए रखने पर सहमति व्यक्त की।

हावड़ा में ड्रेनेज सुधार के लिए ₹15 करोड़ की परियोजना

सौरव कुमार द्वा: लगातार हो रही मानसूनी बारिश के कारण हावड़ा शहर के कई इलाकों में जलभराव की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। पंप लगातार चलाए जाने के बावजूद अनेक क्षेत्रों में नालियों का पानी सड़कों, गलियों और घरों तक पहुंच गया है, जिससे आम लोगों का जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इस स्थिति से निपटने के लिए हावड़ा नगर निगम ने कोलकाता महानगर विकास प्राधिकरण (केएमडीए) के सहयोग से शहर की जल निकासी व्यवस्था को मजबूत करने का कार्य तेज कर दिया है।

पत्रकार वार्ता में राज्य के नगर एवं शहरी विकास राज्य मंत्री उमेश राय ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा आवंटित 15 करोड़ रुपये की लागत से शहर के विभिन्न हिस्सों में ड्रेनेज सुधार का कार्य चल रहा है। इस अवसर पर हावड़ा के विधायक संजय सिंह, रुद्रनील घोष, हावड़ा नगर निगम के आयुक्त तेजस्वी राणा तथा अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। मंत्री ने बताया कि नगर एवं शहरी विकास विभाग को हावड़ा शहर से नागरिक समस्याओं से संबंधित कुल 22 शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनमें 16 शिकायतें जलभराव से जुड़ी थीं। उन्होंने कहा कि हावड़ा की संपूर्ण जल निकासी व्यवस्था के आधुनिकीकरण के लिए लगभग 4,700 करोड़ रुपये की एक व्यापक परियोजना तैयार की गई है, जिसकी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट मुख्यमंत्री को भेज दी गई है।

उन्होंने यह भी बताया कि नगर निगम में तकनीकी कर्मचारियों की कमी को देखते हुए केएमडीए से 15 अनुभवी इंजीनियरों को इस परियोजना में नियुक्त किया गया है, ताकि कार्य में तेजी लाई जा सके। नागरिक सुविधाओं को बेहतर बनाने के उद्देश्य से हावड़ा नगर निगम ने एक विशेष हेल्पलाइन एवं व्हाट्सऐप नंबर 6293708976 भी शुरू किया है।

इस नंबर पर फोन या व्हाट्सऐप के माध्यम से ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, पेयजल, जल निकासी, सड़क मरम्मत और स्वास्थ्य संबंधी शिकायतें दर्ज कराई जा सकती हैं। अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि शिकायत मिलने के बाद संबंधित विभाग तुरंत आवश्यक कार्रवाई करेगा।

हावड़ा से धर्मतला तक शिक्षा संस्कृति सुरक्षा मंच की विशाल रैली

देश विरोधी गतिविधियों के खिलाफ विरोध दर्ज कराते हुए शिक्षा संस्कृति सुरक्षा मंच की ओर से हावड़ा स्टेशन से धर्मतला तक एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। विभिन्न मांगों को लेकर निकाली गई इस विरोध रैली में सैकड़ों कार्यकर्ता और समर्थक शामिल हुए।

रैली हावड़ा स्टेशन से शुरू होकर धर्मतला के लिए रवाना हुई। इसमें शामिल लोगों ने देश विरोधी गतिविधियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की तथा राष्ट्रीय सुरक्षा, शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के समर्थन में विभिन्न नारे लगाए।

आयोजकों का कहना है कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य देश की एकता, अखंडता और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए आम लोगों को जागरूक करना है। शांतिपूर्ण ढंग से आयोजित इस रैली में विभिन्न जिलों से भी कार्यकर्ता और समर्थक शामिल हुए।

करीब 8 महीने बाद खुली बाली की महादेव जूट मिल

करीब आठ महीने से बंद पड़ी बाली की महादेव जूट मिल के दोबारा खुलने से मजदूरों में खुशी की लहर दौड़ गई। सुबह मिल का गेट खुलते ही मजदूरों ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाई और भगवा अबीर लगाकर उत्साह के साथ इस मौके का स्वागत किया। बाली के विधायक संजय सिंह ने विधिवत मिल का गेट खोलकर संचालन की शुरुआत की।गौरतलब है कि 24 दिसंबर 2025 को विभिन्न कारणों से महादेव जूट मिल अचानक बंद हो गई थी। मिल बंद होने के कारण आर्थिक संकट से जूझ रहे लगभग 850 मजदूरों और उनके परिवारों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मजदूरों की समस्याओं के समाधान के लिए कुछ दिन पहले कोलकाता स्थित न्यू सेक्रेटेरिएट में पश्चिम बंगाल सरकार के श्रम विभाग के प्रभारी मंत्री अर्जुन सिंह की अध्यक्षता में एक संयुक्त बैठक आयोजित की गई। बैठक में राज्य के श्रम राज्य मंत्री भास्कर भट्टाचार्य, श्रम सचिव रचना भगत, तीनों श्रमिक यूनियनों के प्रतिनिधि, विशेष श्रम आयुक्त आशीष सरकार तथा हावड़ा के उप श्रम आयुक्त सुमंत राय उपस्थित थे। बैठक में विस्तृत चर्चा के बाद महादेव जूट मिल को फिर से खोलने का निर्णय लिया गया। आज से मिल के दोबारा चालू होने से लगभग 850 मजदूरों को सीधा लाभ मिला है। मिल खुलने के बाद मजदूरों ने इसे अपने संघर्ष की जीत बताते हुए खुशी जाहिर की और उम्मीद जताई कि अब उनका रोजगार नियमित रूप से चलता रहेगा।

'एंड सन्स' नहीं, 'एंड डॉटर' महिला सशक्तिकरण का संदेश

हावड़ा: व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के नाम के अंत में 'एंड सन्स' लिखना वर्षों से एक परंपरा रही है। इसी परंपरा को तोड़ते हुए हावड़ा की एक मिठाई की दुकान ने नई मिसाल पेश की है। नेताजी सुभाष रोड स्थित इस प्रतिष्ठान का नाम घोषाल एंड डॉटर है।

यह सिर्फ एक अलग नाम नहीं, बल्कि महिला सशक्तिकरण, समान अधिकार और उत्तराधिकार को लेकर एक सकारात्मक सोच का प्रतीक भी है। इस मिठाई की दुकान की स्थापना वर्ष 2018 में दूरदर्शन की पूर्व उद्घोषिका और एंकर डॉ. सुतपा घोषाल ने की थी। विज्ञान विषय से स्नातक करने के बाद उन्होंने रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय से नाटक विषय में स्नातकोत्तर और पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। लंबे समय तक कला और संस्कृति के क्षेत्र से जुड़े रहने के बाद उन्होंने अपने सपने को साकार करने के लिए मिठाई के व्यवसाय में कदम रखा।

व्यवसाय शुरू करने से पहले उन्होंने जादवपुर विश्वविद्यालय से फूड प्रोसेसिंग का अध्ययन किया तथा पश्चिम बंगाल सरकार के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर व्यावहारिक अनुभव भी हासिल किया।डॉ. सुतपा घोषाल का कहना है कि मिठाई केवल एक खाद्य पदार्थ नहीं, बल्कि बंगाल की संस्कृति, परंपरा और भावनाओं का अभिन्न हिस्सा है। इसलिए उच्च गुणवत्ता, स्वच्छता और स्वाद के साथ लोगों तक मिठाइयाँ पहुँचाना ही उनका मुख्य उद्देश्य है।

गुणवत्ता के साथ कभी समझौता न करना उनके संस्थान की सबसे बड़ी प्रतिबद्धता है। हालाँकि, इस पहल की सबसे खास बात इसका नाम है। डॉ. घोषाल ने बताया कि उन्होंने जानबूझकर 'एंड सन्स' की जगह 'एंड डॉटर' नाम चुना। उनका मानना है कि बेटा और बेटी में कोई अंतर नहीं होता। एक बेटी भी समान दक्षता के साथ पारिवारिक व्यवसाय की जिम्मेदारी संभाल सकती है और उसकी उत्तराधिकारी बन सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि उनका कोई पुत्र नहीं है। यदि पुत्र भी होता तो शायद दुकान का नाम 'एंड सन्स एंड डॉटर्स' रखा जाता।

लेकिन उनकी केवल एक बेटी है, इसलिए उन्होंने 'घोषाल एंड डॉटर' नाम को ही चुना। भविष्य में वह इस व्यवसाय की पूरी जिम्मेदारी अपनी बेटी को सौंपना चाहती हैं।

डॉ. सुतपा घोषाल ने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में घोषाल एंड डॉटर केवल पश्चिम बंगाल ही नहीं, बल्कि देश के विभिन्न हिस्सों में भी अपनी पहचान बनाएगा। साथ ही, इस पहल के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित करना भी उनका प्रमुख लक्ष्य है। उनका कहना है कि किसी भी संस्थान की सबसे बड़ी पूंजी लोगों का विश्वास और भरोसा होता है, और उसी विश्वास को बनाए रखना उनका सबसे बड़ा संकल्प है।

विश्व हिंदू परिषद-बजरंग दल ने कराया सुंदरकांड

विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल की ओर से रविवार को हावड़ा के रामकृष्णपुर गंगा घाट स्थित पंचमुखी हनुमान मंदिर में एक दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के तहत सुंदरकांड पाठ, हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ एवं भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर भक्तिमय वातावरण का आनंद लिया।कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के साथ-साथ क्षेत्र के अनेक हनुमान भक्त उपस्थित रहे। पूरे दिन मंदिर परिसर जय श्रीराम और जय बजरंगबली के उद्घोष से गूंजता रहा। श्रद्धालुओं ने विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना कर भगवान हनुमान से सुख, समृद्धि और राष्ट्र की उन्नति की कामना की।धार्मिक आयोजन का समापन हनुमान जी की भव्य आरती के साथ हुआ। इसके बाद सभी श्रद्धालुओं के बीच महाप्रसाद का वितरण किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। इस सफल आयोजन में अभिनव मिश्रा, गोविंद सिंह, शशिकांत सिंह, अमन चौधरी और दीपक जायसवाल सहित विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल के अन्य सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उपेंद्र राय ने बताया कि ऐसे धार्मिक कार्यक्रम समाज में आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक मूल्यों को मजबूत करने का कार्य करते हैं।

पुलिस करेगी जन्म और मृत्यु प्रमाणपत्रों में भ्रष्टाचार की जांच

हावड़ा: जन्म और मृत्यु प्रमाणपत्रों में किसी प्रकार की अनियमितता या भ्रष्टाचार हुआ है या नहीं, इसकी जांच के लिए पंचायतों और नगरपालिकाओं में पुलिस अभियान चलाया जा रहा है। हावड़ा सिटी पुलिस की एक जांच टीम ने हावड़ा नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग में छापेमारी की। पुलिस अधिकारियों ने वहां जन्म और मृत्यु के रजिस्टरों की गहन जांच की। इसके साथ ही विभिन्न दस्तावेजों और अभिलेखों का भी सत्यापन किया गया। प्रारंभिक तौर पर आशंका जताई जा रही है कि विधानसभा चुनाव से पहले तृणमूल कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में इस मामले में भ्रष्टाचार हुआ हो सकता है। इसी पहलू की जांच की जा रही है।

शिवपुर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक तथा हावड़ा नगर निगम के प्रभारी समिति सदस्य रुद्रनील घोष ने कहा कि तृणमूल सरकार के कार्यकाल में हावड़ा नगर निगम भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया था। यहां विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार हुए हैं। जन्म और मृत्यु प्रमाणपत्रों के मामले में भी अनियमितता या भ्रष्टाचार होने की आशंका है, जिसकी जांच पुलिस कर रही है। हालांकि अब तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि कितने फर्जी प्रमाणपत्र जारी किए गए हैं। उन्होंने कहा कि जांच में जो भी दोषी पाए जाएंगे, उन्हें किसी भी तरह की रियायत नहीं दी जाएगी।

पंचायत प्रमुखों की वित्तीय शक्तियों में होगा बदलाव दिलीप घोष

सोनू कुमार झा: राज्य में नई सरकार के गठन के लगभग तीन महीने बाद पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने पंचायत चुनाव से पहले विकास कार्यों में तेजी लाने की कवायद शुरू कर दी है। इसी क्रम में हावड़ा के शरत सदन में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की जिला स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसमें विभागीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई।बैठक के दौरान पंचायत मंत्री दिलीप घोष ने कहा कि सरकार नए पंचायत कानून के तहत पंचायत प्रधान और उपप्रधान की वित्तीय शक्तियों में बदलाव करने जा रही है। प्रस्तावित संशोधन के अनुसार भविष्य में पंचायत के चेकों पर हस्ताक्षर करने का अधिकार सचिव को दिया जाएगा। इस संबंध में विधानसभा में जल्द ही नया विधेयक लाया जाएगा। उन्होंने कहा कि पूरे देश में केवल पश्चिम बंगाल में ही पंचायत प्रधान और उपप्रधान के पास इस तरह की वित्तीय शक्तियां हैं। उनके अनुसार, बकाया भुगतान के नाम पर कथित 'कट मनी' वसूली की शिकायतों को रोकने के लिए यह कदम उठाया जा रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इससे नौकरशाही का हस्तक्षेप नहीं बढ़ेगा।

उन्होंने कहा कि जब इंजीनियर, बीडीओ और अन्य अधिकारी विकास कार्यों के बिल पास कर सकते हैं, तो सचिव के हस्ताक्षर करने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए।

समीक्षा बैठक में विभाग के राज्य मंत्री शांतनु प्रामाणिक, विभागीय सचिव पी. उलगानाथन, जिला मजिस्ट्रेट पी. दीपप्रिया सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। जिले के सभी 14 प्रखंडों के पंचायत अधिकारी और कर्मचारियों ने भी बैठक में हिस्सा लिया। बैठक में हावड़ा जिले में विभिन्न ग्रामीण विकास योजनाओं की धीमी प्रगति पर भी चर्चा हुई। अधिकारियों के अनुसार, प्रधानमंत्री आवास योजना, ग्रामीण सड़क निर्माण, अन्नपूर्णा भंडार और अन्य योजनाओं के कार्य अपेक्षित गति से नहीं चल रहे हैं। इस पर दिलीप घोष ने कहा कि पंचायत प्रमुखों के रिक्त पद, नए बीडीओ की नियुक्ति और कर्मचारियों की कमी जैसी वजहों से काम प्रभावित हुआ है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि अब कर्मचारियों की नियुक्ति जिला प्रशासन के बजाय लोक सेवा आयोग (PSC) के माध्यम से होगी, जिससे विकास कार्यों में तेजी आएगी। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र सरकार की ओर से आवश्यक वित्तीय सहायता उपलब्ध करा दी गई है।

अम्फान राहत वितरण में कथित अनियमितताओं का उल्लेख करते हुए दिलीप घोष ने आरोप लगाया कि पिछली सरकार के दौरान कई पंचायत प्रधानों, उपप्रधानों और उनके परिजनों को राहत राशि मिली, जबकि वास्तविक पीड़ितों को लाभ नहीं मिल सका। उन्होंने दावा किया कि नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) की रिपोर्ट में भी इस तरह की अनियमितताओं का उल्लेख है और वर्तमान सरकार सभी मामलों की जांच करा रही है।

इस दौरान दिलीप घोष ने अभिनेत्री श्रीलेखा मित्रा द्वारा प्रधानमंत्री पर की गई टिप्पणी की भी आलोचना की। उन्होंने कहा कि चुने हुए जनप्रतिनिधियों पर इस प्रकार की टिप्पणी करना उचित नहीं है। उन्होंने बताया कि इस मामले में पुलिस में प्राथमिकी दर्ज की गई है और जांच जारी है। साथ ही उन्होंने कहा कि सरकार बदल चुकी है और कानून के तहत सभी मामलों में कार्रवाई की जाएगी।

नवान्न में बदला रंग! नीले की जगह भगवा नेमप्लेट

हावड़ा: राज्य के मुख्य प्रशासनिक भवन नवान्न को लेकर एक बार फिर चर्चा तेज हो गई है। लगभग 15 वर्षों तक तृणमूल कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में नवान्न भवन के ऊपर लगा 'नवान्न' नामपट्ट (नेमप्लेट) नीले रंग का था। लेकिन राज्य में सत्ता परिवर्तन के बाद धीरे-धीरे इसकी पहचान में बदलाव दिखाई देने लगा है। हाल ही में नवान्न भवन के ऊपर लगे 'नवान्न' नामपट्ट का रंग नीले से बदलकर भगवा कर दिया गया है। इससे पहले नवान्न सभागार के रंग में भी परिवर्तन देखा गया था। अब मुख्य प्रशासनिक भवन के नामपट्ट में यह बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने के बाद राजनीतिक गलियारों में नई चर्चाएं शुरू हो गई हैं। सोशल मीडिया पर नवान्न के नए भगवा रंग के नेमप्लेट की तस्वीरें तेजी से वायरल हो रही हैं। कई लोग इसे नई सरकार की प्रशासनिक पहचान का प्रतीक मान रहे हैं, जबकि विपक्ष के एक वर्ग का दावा है कि यह बदलाव राजनीतिक रंग का प्रतिबिंब है।हालांकि, राज्य सरकार की ओर से इस रंग परिवर्तन को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। इसके बावजूद नवान्न का यह नया स्वरूप सोशल मीडिया और राजनीतिक हलकों में चर्चा का प्रमुख विषय बना हुआ है।

हावड़ा जिले में जनगणना 2027 का कार्य शुरू

सोनी कुमारी झा: हावड़ा जिले में जनगणना 2027 का कार्य शुरू हो चुका है। इस चरण में स्व-गणना (Self-Enumeration), गृह सूचीकरण (House Listing) तथा आवास जनगणना (Housing Census) का कार्य व्यापक स्तर पर किया जाएगा।

हावड़ा की जिलाधिकारी पी. दीपप्रिया ने बताया कि जनगणना 2027 का कार्य स्व-गणना प्रक्रिया के माध्यम से 1 अगस्त से 15 अगस्त तक चलेगा। इसके बाद पूरे जिले में 16 अगस्त से 14 सितंबर 2026 तक गृह सूचीकरण एवं आवास जनगणना का कार्य पूरा किया जाएगा।

इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए 7,642 गणनाकर्मी (Enumerators) और 1,273 पर्यवेक्षक (Supervisors) नियुक्त किए गए हैं। वे जिले के 14 ग्रामीण विकास खंडों तथा बाली और उलूबेड़िया नगरपालिकाओं के अंतर्गत घर-घर जाकर जानकारी एकत्र करेंगे। यह कार्य जनगणना अधिनियम तथा भारत के रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त के कार्यालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार किया जाएगा।

इस अवसर पर जिला प्रशासन ने सरकारी कर्मचारियों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने का निर्णय लिया है। साथ ही, जनजागरूकता बढ़ाने पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है।

हावड़ा के 14 ग्रामीण ब्लॉकों और दो नगरपालिकाओं के अंतर्गत कुल 6,948 हाउस लिस्टिंग ब्लॉक हैं। इन ब्लॉकों की जियो-टैगिंग तथा सीमांकन का कार्य लगभग पूरा हो चुका है। गणनाकर्मियों और पर्यवेक्षकों का प्रशिक्षण भी संपन्न हो गया है।

जिलाधिकारी ने बताया कि सभी गणनाकर्मियों को पहचान पत्र प्रदान किए जाएंगे। वे घर-घर जाकर जानकारी एकत्र करेंगे और उसे जनगणना पोर्टल पर अपलोड करेंगे।

जनगणना के प्रति व्यापक जनजागरूकता पैदा करने के लिए पूरे जिले में सूचना, शिक्षा एवं संचार (IEC) से संबंधित गतिविधियां चलाई जा रही हैं। लोगों की भागीदारी और सहयोग बढ़ाने के लिए बैनर, फ्लेक्स, पोस्टर तथा ऑडियो प्रचार माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है। इसके अलावा, जनगणना का कार्य सुचारु रूप से संपन्न कराने के लिए जिला प्रशासन ने एक विशेष जिला जनगणना प्रकोष्ठ (District Census Cell) का भी गठन किया है।

ऐतिहासिक हुगली डॉक को फिर मिलेगी नई पहचान

हावड़ा के औद्योगिक विकास को नई गति देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत आज नाज़िरगंज स्थित हुगली कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड का दौरा कर वहां चल रहे विभिन्न विकास एवं निर्माण कार्यों का निरीक्षण मंत्री उमेश राय ने । इस दौरान सालकिया के ऐतिहासिक हुगली डॉक से जुड़े दुर्लभ उपकरणों और उसकी गौरवशाली विरासत को संजोए संग्रहालय का भी अवलोकन किया गया।

निरीक्षण के दौरान बताया गया कि एक समय सालकिया का हुगली डॉक देश के प्रमुख शिपयार्डों में शामिल था। यहां निर्मित जहाज़ दुनिया के कई देशों तक भेजे जाते थे और यह शिपयार्ड भारतीय जहाज़ निर्माण उद्योग की शान माना जाता था। हालांकि, पिछले कई वर्षों से यह ऐतिहासिक डॉक बंद पड़ा है, जिसके कारण इसकी पहचान धीरे-धीरे धूमिल होती चली गई।

इस अवसर पर यह जानकारी साझा की गई कि शीघ्र ही हुगली कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के माध्यम से सालकिया स्थित हुगली डॉक में पुनः जहाज़ निर्माण और अन्य औद्योगिक गतिविधियां शुरू होने जा रही हैं। इसी क्रम में नाज़िरगंज स्थित शिपयार्ड में वर्तमान में चल रहे कार्यों की प्रगति का भी विस्तार से जायजा लिया गया। दौरे के दौरान विश्वास व्यक्त किया गया कि आने वाले समय में सालकिया का ऐतिहासिक हुगली डॉक एक बार फिर जहाज़ निर्माण के क्षेत्र में अपनी पुरानी प्रतिष्ठा हासिल करेगा। इसके साथ ही यह परियोजना हावड़ा के औद्योगिक विकास को नई दिशा देने, स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने तथा क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

स्थानीय लोगों और उद्योग जगत को भी उम्मीद है कि हुगली डॉक के पुनर्जीवन से हावड़ा एक बार फिर देश के प्रमुख औद्योगिक केंद्रों में अपनी मजबूत पहचान स्थापित करेगा।

जानलेवा हमले के दोषी गणेश यादव को 7 साल की सजा

11 सितंबर 2020 को एजेसी बोस बॉटनिकल गार्डन थाना में एक लिखित शिकायत दर्ज कराई गई। शिकायत के अनुसार, 10 सितंबर 2020 की रात लगभग 10:00 बजे शिकायतकर्ता के मामा और गणेश यादव के बीच विवाद हो गया। विवाद को शांत कराने के लिए शिकायतकर्ता के पिता बीच-बचाव करने पहुंचे। इसी दौरान आरोपी गणेश यादव ने शिकायतकर्ता के पिता पर जान से मारने की नीयत से हमला कर दिया और उनके अंडकोष (टेस्टिकल्स) को गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया। हमले में पीड़ित को अत्यधिक रक्तस्राव हुआ और गंभीर हालत में उन्हें हावड़ा जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया।

इस घटना के संबंध में एजेसी बोस बॉटनिकल गार्डन थाना कांड संख्या 143/2020, दिनांक 11 सितंबर 2020, भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 307 के तहत गणेश यादव के खिलाफ मामला दर्ज किया गया।

जांच के दौरान विवेचक (आईओ) एएसआई मोहम्मद जादव आलम खान ने आरोपी को गिरफ्तार किया तथा मामले से संबंधित सभी आवश्यक साक्ष्य एकत्र किए। मुकदमे की सुनवाई के बाद हावड़ा सदर न्यायालय की तृतीय फास्ट ट्रैक अदालत के माननीय अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने गणेश यादव को दोषी करार देते हुए भारतीय दंड संहिता की धारा 308 के तहत 7 वर्ष के कठोर कारावास तथा 5,000 रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई। जुर्माना अदा न करने की स्थिति में आरोपी को 6 माह का अतिरिक्त साधारण कारावास भुगतना होगा।

सरोज कुमार झा को 'मिथिला गौरव सम्मान 2026-27' से सम्मानित

बंगवासी मिथिला समाज समिति द्वारा देश के प्रतिष्ठित विधिवेत्ता एवं सराफ एंड पार्टनर्स के वरिष्ठ साझेदार अधिवक्ता सरोज कुमार झा को समाजसेवा तथा न्याय के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय योगदान के लिए 'मिथिला गौरव सम्मान 2026-27' से सम्मानित किया गया। श्री झा कॉर्पोरेट, रियल एस्टेट तथा नियामकीय विधि के क्षेत्र में वरिष्ठ अधिवक्ता हैं और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं।

यह सम्मान नई दिल्ली में आयोजित एक गरिमामय समारोह में बंगवासी मिथिला समाज समिति के मुख्य संरक्षक पवन कुमार झा तथा उपाध्यक्ष अमित कुमार झा द्वारा संयुक्त रूप से प्रदान किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि अधिवक्ता सरोज कुमार झा ने न्याय, विधिक उत्कृष्टता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देकर मिथिला समाज का गौरव बढ़ाया है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से युवा अधिवक्ताओं और समाजसेवियों को निरंतर प्रेरणा मिलती है।

समिति ने विश्वास व्यक्त किया कि श्री झा भविष्य में भी न्याय, समाजसेवा एवं राष्ट्रहित के कार्यों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते रहेंगे तथा मिथिला की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयों तक पहुचाएगें।

सरकार के ऐतिहासिक निर्णय से देश विरोधी ताकतों के मंसूबों पर फिरा पानी-आरके जायसवाल

सरकार द्वारा नीट परीक्षा विवाद और जंतर-मंतर पर छात्र आंदोलन के बीच लिए गए ऐतिहासिक निर्णय का समाजसेवी एवं अभियंता आर. के. जायसवाल ने स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि इस निर्णय ने देश विरोधी ताकतों के मंसूबों पर पानी फेर दिया है तथा राष्ट्रीय हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की सरकार की प्रतिबद्धता को और अधिक मजबूत किया है।

जायसवाल ने कहा कि राष्ट्रहित से जुड़े विषयों पर सरकार के निर्णायक कदम देश की एकता, अखंडता और विकास को नई दिशा प्रदान करेंगे। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे राष्ट्रहित से जुड़े मुद्दों पर सकारात्मक सहयोग एवं जागरूकता बनाए रखें। उन्होंने कहा कि सरकारी एवं प्रशासनिक स्तर पर पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। धांधली और लापरवाही के आरोपों के चलते नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) के 47 अधिकारियों को सेवा से हटाया गया है। साथ ही, नकल विरोधी कानून पब्लिक एग्जामिनेशन (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए संशोधन प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है, जिसमें भारी जुर्माने और कड़ी सजा का प्रावधान किया गया है। पेपर लीक जैसे मामलों के शीघ्र निस्तारण के लिए विशेष फास्ट-ट्रैक अदालतों के गठन की भी घोषणा की गई है।

उन्होंने आगे कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता सुनिश्चित करने तथा भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए केंद्र सरकार और एनटीए से विस्तृत रिपोर्ट तलब की है। साथ ही, पूरी तरह कंप्यूटर आधारित परीक्षा (CBT) प्रणाली की दिशा में प्रगति तथा डेटा सुरक्षा के ठोस ब्लूप्रिंट पर भी जानकारी मांगी गई है।

जायसवाल ने कहा कि शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का त्यागपत्र छात्रों के प्रति नैतिक जवाबदेही और उच्च लोकतांत्रिक मूल्यों का परिचायक है। उन्होंने इसे भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में जवाबदेही की भावना को मजबूत करने वाला कदम बताया।

उन्होंने यह भी कहा कि इस पूरे विषय को विपक्षी दलों द्वारा राजनीतिक लाभ-हानि से जोड़ने तथा अनावश्यक राजनीतिक रंग देने का प्रयास किया गया, जिससे देश के युवाओं एवं छात्रों की भावनाएं आहत हुई हैं। उन्होंने सभी राजनीतिक दलों से शिक्षा जैसे संवेदनशील विषयों पर राजनीति से ऊपर उठकर छात्रों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की अपील की।

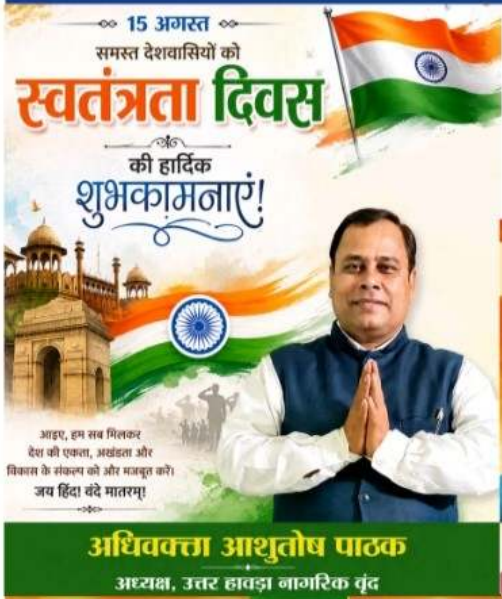

स्वतंत्रता दिवस पर बंगाल में इस बार जगह-जगह होगी भारत माता की पूजा

अजय कुमार झा: पश्चिम बंगाल में इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर भारत माता पूजन के आयोजन की तैयारियां तेज होती दिखाई दे रही हैं। आयोजकों और स्थानीय स्तर पर सक्रिय कई सामाजिक संगठनों का दावा है कि इस बार पिछले वर्षों की तुलना में अधिक संख्या में लोग इन कार्यक्रमों में भाग लेने की तैयारी कर रहे हैं।

राजनीतिक विश्लेषकों और स्थानीय जानकारों का मानना है कि राज्य के बदले राजनीतिक माहौल का प्रभाव सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों पर भी दिखाई दे रहा है। उनके अनुसार, पहले ऐसे आयोजनों को अक्सर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) या उससे जुड़े संगठनों तक सीमित मान लिया जाता था। इसी कारण कई लोग और छोटे सामाजिक संगठन खुलकर इन कार्यक्रमों का हिस्सा बनने से बचते थे।

हालांकि, इस वर्ष स्थिति कुछ अलग दिखाई दे रही है। पश्चिम बंगाल भगवामय होने के बाद कई जिलों में स्थानीय समितियां, सांस्कृतिक मंच, युवा संगठन और विभिन्न सामाजिक समूह स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत माता पूजन के साथ तिरंगा यात्रा, राष्ट्रगान, ध्वजारोहण और देशभक्ति से जुड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने की तैयारी कर रहे हैं। आयोजकों का कहना है कि इन आयोजनों का उद्देश्य राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता संग्राम के वीरों के प्रति सम्मान व्यक्त करना है।

जानकारों का कहना है कि इस बार भारत माता पूजन को लेकर लोगों में पहले की तुलना में अधिक उत्साह देखा जा रहा है। उनका मानना है कि बदलते सामाजिक माहौल के कारण अब कई ऐसे संगठन भी आगे आ रहे हैं, जो पहले सार्वजनिक रूप से इस प्रकार के आयोजनों से दूरी बनाए रखते थे। उनका कहना है कि अब लोग इन कार्यक्रमों को किसी एक संगठन की पहचान के बजाय राष्ट्रभक्ति से जुड़े सांस्कृतिक आयोजन के रूप में देखने लगे हैं।

राज्य के अनेक हिस्सों में 15 अगस्त के दिन सुबह ध्वजारोहण के बाद भारत माता की पूजा, पुष्पांजलि, वंदे मातरम् और भारत माता की जय के उद्घोष के साथ कार्यक्रम आयोजित किए जाने की योजना है। कई स्थानों पर स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि, पौधारोपण, रक्तदान शिविर और विद्यार्थियों के बीच देशभक्ति विषयक प्रतियोगिताओं का भी आयोजन प्रस्तावित है।

हालांकि, आधिकारिक स्तर पर सभी आयोजनों की विस्तृत सूची अभी सार्वजनिक नहीं हुई है, लेकिन स्थानीय स्तर पर तैयारियां लगातार तेज हो रही हैं। विभिन्न सामाजिक संगठनों का कहना है कि स्वतंत्रता दिवस केवल एक राष्ट्रीय पर्व नहीं, बल्कि देश के प्रति अपनी आस्था, सम्मान और कर्तव्यबोध को व्यक्त करने का भी अवसर है।

यदि तैयारियां इसी गति से आगे बढ़ती रहीं, तो इस वर्ष पश्चिम बंगाल में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत माता पूजन के कार्यक्रम पिछले वर्षों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक स्तर पर आयोजित होते दिखाई दे सकते हैं।

बात हिंदुस्तान की अखबार से जुड़ने के लिए सम्पर्क करें: 9798848926

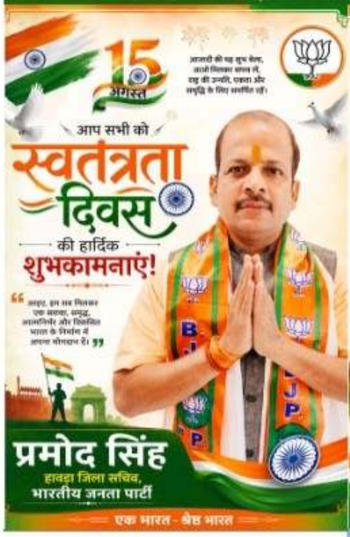

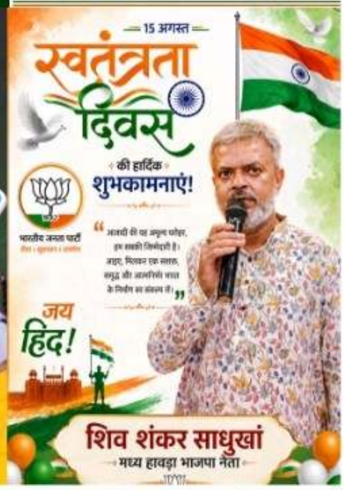

स्वत्वाधिकारी 'बात हिन्दुस्तान की' (पाक्षिक) पेपर के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी, गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन नं.: 8902221434 से प्रकाशित एवं एल.एस पब्लिकेशन्स प्रा. लि.4, कैनल वेस्ट रोड, कोलकाता -700015 से मुद्रित, सम्पादक- वैद्यनाथ झा, फोन-9798848926 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के उत्तरदायी, ईमेल/वेबसाईट - www.baathindustanki@gmail.com
(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan ki' Smt. Soni Kumari Jha, 223, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO_R.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from L.S. publication private limited.4 no, canel west road, Kolkata 700015, Editor: Baidyanath Jha Mo. 9798848926, Email/Website: www.baathindustanki@gmail.com